A-PDF Image To PDF Demo. Purchase from www.A-PDF.com to remove the watermark

शिशु-संगीत

शिशुओ ! 'शिशु' को अपनाओ। (टे

शुभ चिन्तक है यही तुम्हारा, इसे न नेक भुलाओ

काटेगा यह उर की जड़ता, नित नव प्रेम

स्वार्थ रहित हो सेवा करता, आओ हाथ

गणित काव्य विज्ञान कथादिक, इसमें प

तन मन धन सबका साधक है, एकबा

कलित ललित चित्रोंको देखो, अप

रोज नया आनंद मिलेगा बी०ए

(५)

पहले तो मैं खूब नहाया।
दासी से फिर उसे मँगाया॥
आ लिपटी वह मेरे तन में।
है वह कौन तुम्हारे मन में॥

—लाल बुझक्कड़

(६)

न में, जब कि मन ४० सेर का होता है,
टखरा) इस तरीके से बनाओ कि ४०
जितने सेर वस्तु माँगी जावे उन्हीं चारों
न दी जाय और दूसरे बाट की जरूरत

रघुवीर प्रसाद भट्ट।

प उत्तर भेजने वाले बालक और
जिनके कम से कम चार उत्तर ठीक

६२१

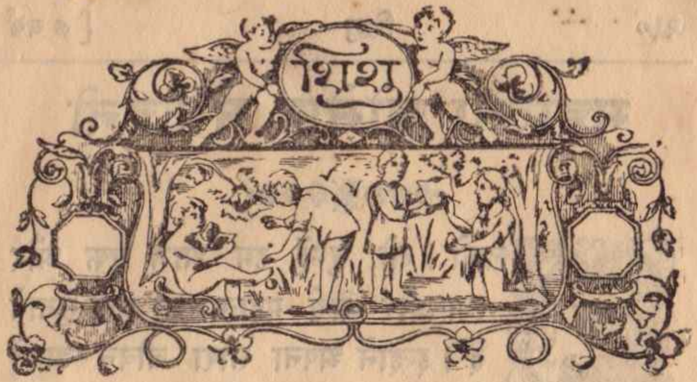

पढ़ो, बढ़ो भारत-सन्तान । हृदय धरो माता का ध्यान ॥
तुमहीं पर आशा है सारी । मुख निरखे भारत-महतारी ॥

सप्तम वर्ष } प्रयाग, मई सन् १९२२ { पञ्चम अङ्क

प्रार्थना

कहाँ तुम रहते हो, भगवान !
कभी न तुमको देखा मैंने, सका न तुमको जान ।
रहते हो तुम पास हमारे फिर कैसे लूँ मान ।
तजो, अकेले रहने की क्यों डाली ऐसी बान ।
नाथ ! ऊबते होगे करलो हम से ही पहिचान ।

—श्रीनाथसिंह

महात्मा जोसेफ़ मेत्ज़िनो

बालको ! लो, तुम्हें हम आज एक और त्यागवीर सच्चे महात्मा का हाल सुनाते हैं। इन्होंने अपना सारा जीवन अपने देश को स्वतंत्र करने में लगा दिया। तन मन और धन से इसी में रत रहे। जहाँ भी रहते देश की धुन में मस्त रहते थे। देश में सदा किसी न किसी प्रकार राष्ट्रीयता और ऐकता के प्रचार करने का भरसक यत्न करते थे। इन्होंने बड़े दुःख सहे। कभी २ तो ऐसा समय आगया कि इनके खाने तक के लाले पड़े। एक समय भोजन किया तो दूसरे समय की आशा नहीं। एक घर से दूसरे घर में और दूसरे से तीसरे घर में जाना पड़ता था। विपत्तियों ने भरसक तंग किया परन्तु ये कब मानने वाले थे अपने उद्देश्य पर डटे ही रहे। सच है जो लोग दृढ़-प्रतिज्ञ और कर्तव्यवान होते हैं, जिनमें अपने ध्येय तक पहुँचने की सच्ची लगन होती है, जो जीवन मरण का कुछ भी विचार नहीं करते और ईश्वर को अपना प्रभु समझते हुए अपनी धुन में पक्के

पढ़ो, बढ़ो भारत-सन्तान। हृदय धरो माताका ध्यान ॥
तुमहीं पर आशा है सारी। मुख निरखे भारत महतारी ॥

} प्रयाग, फरवरी, सन् १९२३ { द्वितीय अङ्क

विधाता

कहलाते हो परम पिता तुम, करते हमको प्यार विधाता।
किन्तु न जानूँ कहाँ छिपे हो, यह कैसा व्योहार विधाता।
पहनाने लाया हूँ तुमको, भक्तिभाव का हार विधाता।
सूख न जावे पुष्प, पधारो, कब से रहा पुकार विधाता।

—तुम्हारा "शिशु"

ईश्वरभक्त प्रह्लाद।

प्यारे बालको ! आज तक संसार में जितने ईश्वर के सच्चे भक्त हुए हैं उन सबों में प्रह्लाद का स्थान बहुत ऊँचा है। प्रह्लाद की जीवनी पढ़ने से न केवल ईश्वरभक्ति की ही शिक्षा मिलती है किन्तु और भी बहुत सी लाभकारी शिक्षाएँ मिलती हैं। इसलिये आज हम तुमको उसी प्रह्लाद के बारे में कुछ बतलावेंगे।

बहुत समय बीता भारतवर्ष में हिरण्यकश्यप नाम का एक राजा राज्य करता था। वह शिव जी का बड़ा भक्त था और उसने शिव जी से बहुत से बरदान पाये थे। वह बड़ा पराक्रमी तथा शूरवीर था। उसके बल की धाक इतनी जम गई थी कि बड़े २ साहसी मनुष्यों तथा देवताओं के प्राण तक उसका नाम सुनते ही सूख जाते थे। किन्तु इतना होते हुए भी वह शिव जी के भक्तों को छोड़ कर और दूसरे देवताओं की पूजा करने वालों से बहुत चिढ़ता था। उन लोगों को बहुत दण्ड देता था

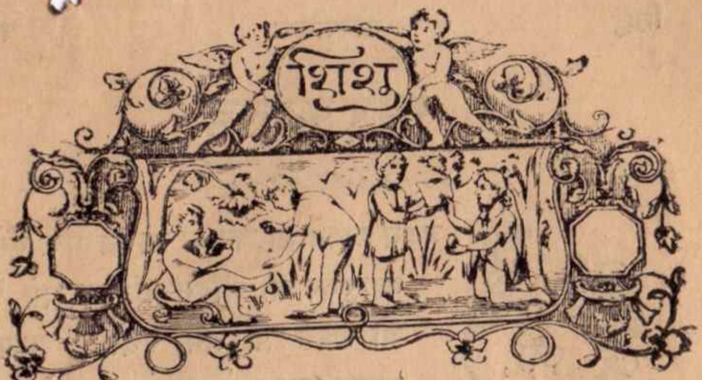

पढ़ो, बढ़ो भारत-सन्तान । हृदय धरो माताका ध्यान ॥
तुमहीं पर आशा है सारी । मुख निरखे भारत-महतारी ॥

८ वर्ष } प्रयाग, मार्च, सन् १९२३ { तृतीय अङ्क

विधाता

दर दर ठोकर खाते फिरते सहते नित अपमान विधाता !
जन्म दिया क्यों रहा न जब कुछ रहने को भी स्थान विधाता !
शिशु हैं शिशुता भरी हुई है करो न इसका ध्यान विधाता !
भुला रहे क्यों? क्या न तुम्हारी हम भी हैं सन्तान विधाता !

—तुम्हारा "शिशु"

गारफील्ड

आज हम अपने पाठकों के सामने एक ऐसे महापुरुष का जीवन-चरित्र रखते हैं जो अपने परिश्रम, उद्योग, अध्यवसाय तथा कर्त्तव्यपरायणता के बल एक दरिद्र की हैसियत से बढ़ते २ अमेरिका का प्रेसिडेण्ट हो गये। इनका शुभ नाम जेम्स एबरम् गारफील्ड है।

एक शताब्दी पहिले की बात है। उस समय अमेरिका इतना सभ्य नहीं था। उन दिनों अमेरिका के ओहियो खण्ड के आरेंज नामक गाँव में एबरम् गारफील्ड नाम का एक साधारण किसान रहता था। यही हमारे चरितनायक का पिता था।

जेम्स गारफील्ड का जन्म १९ नवम्बर सन् १८३१ को हुआ। जेम्स एक ही वर्ष का था कि इसके पिता का देहांत हो गया। इसकी माँ एक धार्मिक तथा शिक्षित स्त्री थी। उसने खेत के कुछ अंश को बेच कर अपना ऋण अदा किया।

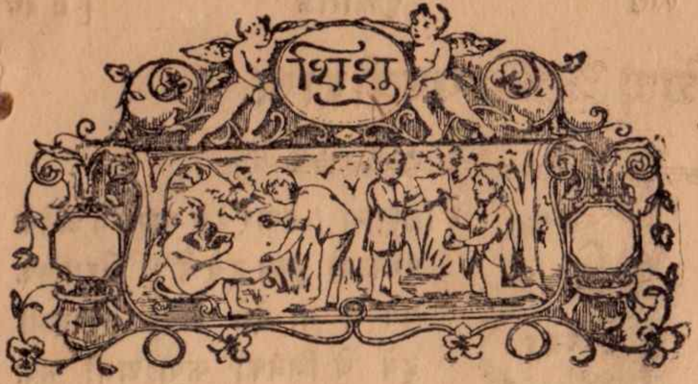

पढ़ो, बढ़ो भारत-सन्तान । हृदय धरो माताका ध्यान ॥
तुमहीं पर आशा है सारी । सुख निरखे भारत-महतारी ॥

अष्टम वर्ष } प्रयाग, अगस्त सन् १९२३ { अष्टम अङ्क

शिशु-संगीत

वही खिलौना दो भगवान !
जिससे खेलें, जिसमें खेलें, जिस पर खेलें खेल महान ।
जिसको खेलें करें कुलेलें डण्डें पेलें गावें गान ॥
जिसके उर हो. जिसके सुर हो, जिसके धुर* हो मेरा मान ।
जिसकी मर्य्यादा का मन में निजसे भी हो ज्यादा ध्यान ॥
वही खिलौना दो भगवान !

—श्रीनाथ सिंह

* निकट

पृथ्वीराज

प्यारे शिशुओ ! हमारे इस भारत में अनेक पराक्रमी पुरुष हुये हैं। पौराणिक युग में तो ऐसे अनेक पराक्रमी हुये थे जिनकी कथा अभी तक प्रचलित है। पर यह कलियुग भी पराक्रमी पुरुषों से खाली नहीं रहा है। पृथ्वीराज भी इन्हीं पराक्रमी पुरुषों में से थे।

लगभग एक हजार वर्ष हुए पृथ्वीराज का पिता अजमेर का राजा था और उसका नाना दिल्ली का। बचपन से ही पृथ्वीराज का जी अस्त्र शस्त्र चलाने में लगता था, उसका अधिक समय आखेट में ही बीतता था। इससे अस्त्र शस्त्रों के चलने में उसे अच्छी प्रवीणता प्राप्त हो गई थी। पिता के मरने पर पृथ्वीराज अजमेर का राजा हुआ। अपने पराक्रम से उसने आस पास के बहुत से राजाओं को जीत लिया। परन्तु अनेक प्रयत्न करने पर भी गुजरात के राजा भीमदेव को न जीत सका। पृथ्वी राज ने बहुत चढ़ाई की पर सफलता

शिशु

पढ़ो, बढ़ो भारत-सन्तान । हृदय धरो माता का ध्यान ॥
तुमहीं पर आशा है सारी । मुख निरखे भारत-महतारी ॥

अष्टम वर्ष } प्रयाग, सितम्बर सन् १९२३ {नवम अङ्क

उलहना

सूरज निकला हुआ सवेरा दिन बीता फिर आई शाम ।
रात हुई फिर ऊषा आई योंही होती आयु तमाम ॥
शक्ति-हीन हम आशा-हत हो अब तब कर रह जाते हैं ।
ीलिये क्या रोज सवेरे तुमको शीश झुकाते हैं ? ॥

—एक भक्त

पं० गुरुदत्त विद्यार्थी

प्यारे बालको ! स्वामी दयानन्द सरस्वती का नाम किसने न सुना होगा। आज हम उन्हीं के सच्चे भक्त पण्डित गुरुदत्त विद्यार्थी का हाल तुम्हे बतलावेंगे।

पण्डित जी का जन्म पञ्जाब के प्रसिद्ध नगर मुल्तान में २६ अप्रैल सन् १८६१ ईसवी में हुआ था। इनके पूर्वज लोग सदा अपनी वीरता के लिये प्रसिद्ध थे। आप के पिता का नाम लाला राम कृष्ण था। इनको कभी भी रणक्षेत्र में जाने का अवसर नहीं मिला था किन्तु ये फ़ारसी के बड़े विद्वान थे और एक स्कूल में अध्यापक का काम करते थे। पण्डित जी की माता यद्यपि अपढ़ थीं तिस पर भी घर के काम काज में बहुत चतुर थीं। पतिव्रता स्त्रियों के सब गुण इनमें पाये जाते थे। पण्डित जी अपने माता पिता के अन्तिम और अकेले ही लड़के थे। इसीलिये माँ बाप इनको अत्यन्त प्यार करते थे। लड़क-

शिशु

पढ़ो, बढ़ो भारत-सन्तान। हृदय धरो माता का ध्यान॥
तुमहीं पर आशा है सारी। मुख निरखे भारत-महतारी॥

अष्टम वर्ष } प्रयाग, नवम्बर सन् १९२३ { एकादश अङ्क

हे प्रभो !

सुनता हूँ तुम परम पिता हो तुम्हीं हमारे हो पालक॥
इसी भूमि में विचर चुके हो तुम भी बन हम से बालक॥
अवगुण की हम खान कदाचित पास नहीं इससे आते।
मातृ-भूमि है किन्तु एक ही आओ उसके ही नाते॥

—शिशु

—:०:—

शिशु

पढ़ो, बढ़ो भारत-सन्तान। हृदय धरो माता का ध्यान॥
तुमहीं पर आशा है सारी। मुख निरखे भारत-महतारी॥

अष्टम वर्ष } प्रयाग, अक्टूबर सन् १९२३ { दशम अङ्क

शिकायत

है अनन्त धन-राशि देश में फिर भी बने भिखारी हम।
निज जननी ही का गोदी में इतने दलित दुखारी हम॥
है असह्य—इससे करते हैं—करुणाकर गिरधारी हम—
बड़े निठुर हो—यही शिकायत, तुमसे आज, तुम्हारा हम॥

—तुम्हारे शिशु

दानवीर कर्ण

क्या रे बालको ! भला बतलाओ तो तुम लोग दिन भर में कितनी प्रतिज्ञायें करते हो और उनमें से किन २ को पूरी कर डालते हो । इसका पता लगाने से तुम्हें मालूम हो जायगा कि सैकड़ों काम ऐसे हैं जिन्हें तुम प्रतिज्ञा करने पर भी कभी पूरा नहीं करते । इस का क्या कारण है ? सब से मुख्य कारण यह है कि तुम लोग कभी सोच विचार कर प्रतिज्ञा नहीं किया करते । सब बालकों को हर एक काम करने के पहिले यह सोच लेना चाहिये, क्या यह काम अच्छा है ? क्या यह काम मैं कर सकता हूँ ? यदि तुम्हारा हृदय उसे करने के लिये गवाही दे, तो उस काम को तुम कभी भी न छोड़ो चाहे तुम्हें उसके लिये प्राण भी देना पड़े तो बिल्कुल न हिचकिचाओ । संसार में बहुत से ऐसे महापुरुष हुये हैं जिन्होंने अपने प्राण दे दिये हैं किन्तु अपनी प्रतिज्ञा को नहीं छोड़ा । हमारे देश में भी ऐसे महापुरुष अनेकों हुये हैं । उन सबों में दानवीर कर्ण का नाम बहुत प्रेम से

तत्ववेत्ता जान स्टुअर्ट मिल

यूरोप के तत्ववेत्ताओं में जान स्टुअर्ट मिल का बड़ा नाम है । इसका जन्म २० मई सन् १८०६ ई० को लंदन नगर में हुआ था । मिल का पिता जेम्स मिल भी प्रसिद्ध तत्ववेत्ता था । अपने पुत्र को उसने स्वयं ही शिक्षा दी थी । तीन वर्ष की अवस्था से ही मिल का पढ़ना आरम्भ हुआ । मिल को ग्रीक (यूनानी) भाषा पढ़ाई जाने लगी । पांच वर्ष में मिल ने ग्रीक भाषा की कई पुस्तकें पढ़ लीं । आठवें वर्ष में मिल ने लेटिन और अंकगणित पढ़ना आरम्भ किया । मिल के पिता के पढ़ाने का ढङ्ग बहुत ही अच्छा था । जेम्स शाम को अपने पुत्र को ले कर घूमने जाता था । टहलने के समय वह अपने पुत्र को नई नई बातें बतलाता जाता था । इसके अतिरिक्त दिन भर में अपने पुत्र को जितना पढ़ाता था, उसका सारांश भी पूछा करता था ।

बारह वर्ष की उम्र में ही मिल को ग्रीक और लेटिन भाषा का अच्छा ज्ञान हो चुका था । तेरहवें वर्ष से उसे

शिशु

पढ़ो, बढ़ो भारत-सन्तान। हृदय धरो माता का ध्यान॥
तुमहीं पर आशा है सारी। मुख निरखे भारत-महतारी॥

नवम वर्ष } प्रयाग, जनवरी सन् १९२४ { प्रथम अङ्क

नये वर्ष का स्वागत

(१)

कहैं क्यों नहीं बात बीती पुरानी।
खिलौने नये हैं नयी है कहानी॥
निराला नया साज कैसा सजाया।
नया बर्ष आया ! नया वर्ष आया !!

(२)

नयी भावनाएँ नयी कामनाएँ ।
खिलीं ओर चारों शुभाशा लताएँ ॥
नयी क्यारियाँ हैं नया रङ्ग छाया ।
नया वर्ष आया ! नया वर्ष आया !!

(३)

बसन्ती गुलाबी हरा लाल पीला ।
बड़ा ही रँगीला बड़ा ही सजीला ॥
खिलौना हमारा किसे है न भाया ।
नया वर्ष आया ! नया वर्ष आया !!

(४)

नये साल में साथ जो थे हमारे ।
तथा हैं उसी नीति से नेह धारे ॥
बधाई उन्हें है उन्हीं की है माया ।
नया वर्ष आया ! नया वर्ष आया !!

(५)

सदा ही हमारे 'नये वर्ष' आओ !
खिलौने नये से नये साथ लाओ !
पढ़ें बालिका बाल हों कीर्ति-काया ।
नया वर्ष आया ! नया वर्ष आया !!

—'श्रीश'

कुञ्जी का गुच्छा

मैंने उस रोज चाची से मिठाई माँगी उसने नहीं दी। मैं रोकर रह गया। उसी दिन मुन्नों को भी चाची ने मारा था। यों तो मुझसे और मुन्नो से बड़ा बिगाड़ था पर आज बड़ा मेल हो गया। हम दोनों आदमियों ने ज्योंही चाची कमीज उतार कर नहाने लगी—उसके जेब से कुञ्जी का गुच्छा चुरा लिया और सीधे उसके कमरे में चले गये। बड़ा सन्दूक खोल डाला। मिठाई तो नहीं मिली एक रुपया मिला उसे लेकर हम लोग हलवाई के यहाँ चले गये।

* * * *

चाची जब स्नान कर चुकी और कमीज पहिनते पहिनते जेब में हाथ डाला तो देखा कि कुञ्जी का गुच्छा नहीं है। उसने सोचा यह नौकरानी की कार्रवाई है। कमरे में जाकर देखा तो नौकरानी झाड लगा रही थी और सन्दूक खुला पड़ा था।

चाची ने कहा—सन्दूक किसने खोला है ?

नौकरानी—मुझे क्या खबर ?

चाची—और किसे होगी ? तभी तो आज सवेरे से ही यहाँ घुसी है।

नौकरानी—मैं तो अभी आई हूँ।

अभी खबर लेती हूँ, कहकर चाची ने सन्दूक को जाँच की तो रुपया न पाया। नौकरानी की तलाशी ली गई तो उसके पास एक रुपया निकला। अब चाची को विश्वास हो गया कि गुच्छा इसी के पास है। इसी बीच में चाचा आ गए और नौकरानी पर मार पड़ने लगी।

* * * *

जब मैं मुन्नी के साथ वापस लौटा और नौकरानी के रोने की आवाज़ सुनी तो घबरा गया। मुन्नी ने कहा—देखो चोरी हमने की और पीटी वह जाती है। मेरा भी दिल बोल उठा कि हम अपराधी हैं। हम लोगों को देखते ही नौकरानी चिल्ला उठी—भैया लल्लू ! प्यारी मुन्नी ! तुम लोगों ने सन्दूक खोला हो तो कह दो इस पर चाची ने कहा—अरी पापिन ! मेरे लड़कों को ही चोर बनाती है। ये दोनों बच्चे बड़े ईमानदार हैं।

* * * *

चाची की यह बात सुन कर हम दोनों को बड़ी शर्म लगी। उसी दम हमने चाची को चाभी दे दी और कहा —यह लो ! आज हमीं ने ऐसा किया था पर तुमने मुझे ईमानदार कहा इसलिये लो, अपना गुच्छा सँभालो। यह सुनते ही नौकरानी ने लपक कर मुझे गोद में उठा लिया। मुन्नी ने भी चाची से क्षमा प्रार्थना की। तबसे हमको रोज मिठाई मिलती है और मुन्नी से कभी झगड़ा नहीं होता।

—रामप्रसाद सिंह।

अनोखी बातें

(१)

जल के जानवरों को कभी पसीना नहीं आता।

(२)

चींटी के न आँखें होती हैं और न कान। जिस हिसाब से ईश्वर ने चींटी को बल दिया है यदि उसी हिसाब से आदमी को देता तो वह रेल के दो एञ्जिन उठाकर ले जा सकता था।

(३)

अफ्रीका में एक जगह अद्भुत मनुष्य देखने में आये हैं। ये लोग हर समय पानी में तैरते रहते हैं और एक एक घण्टे में पानी पीते हैं। अगर घण्टे घण्टे भर बाद वे पानी न पियें तो उनके होंठ फट जायँ और उनसे ख़ून बहने लगे। वे केवल मछली खाकर रहते हैं।

(४)

एक बार जमैका नामक द्वीप में चूहों का उत्पात इतना बढ़ा कि वहाँ के निवासी उनसे तङ्ग आ गये। उनसे बचने के लिये कुछ नेवले मँगाये गये। नेवलों ने थोड़े ही दिनों में चूहों को भगा दिया पर कुछ दिन में

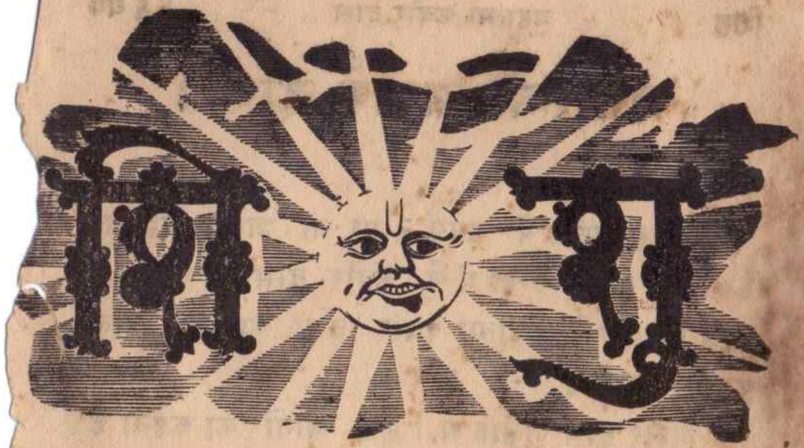

पढ़ो, बढ़ो भारत सन्तान। हृदय धरो माता का ध्यान ॥
तुम हीं पर आशा है सारी। मुख निरखे भारत-महतारी ॥

नवम वर्ष } प्रयाग, फरवरी सन् १९२४ { द्वितीय अङ्क

बाल-विनय।

बहुत दिनों से बुला रहे हैं सारे शिशु गण जोड़े हाथ।
पर तुम आते नहीं, न देते चरणों पर भी धरने माथ ॥
दर्शन दो या नहीं किन्तु यह तो कह दो प्यारे भगवान्।
क्यों हमसे छिपकर रहते हो क्या न हमारा है कुछ ध्यान ॥

—शिशु।

महात्मा कबीर दास ।

इस भारत में समय २ पर जो अनेक महात्मा हुए हैं उन्हीं में से कबीर दास भी एक हैं। आज हम इन्हीं महात्मा कबीर दास का कुछ हाल सुनाना चाहते हैं ।

कबीर दास जुलाहे थे। कुछ लोगों का कहना है कि वे जुलाहे के औरस पुत्र नहीं बल्कि पोष्य-पुत्र थे। कहते हैं कि काशी में नीरू नामक एक जुलाहा रहता था। एक बार वह कहीं जा रहा था कि एक तालाब के किनारे एक बच्चा पड़ा हुआ दिखलाई दिया। नीरु ने इस नवजात बच्चे को उठा लिया और घर ला कर अपनी स्त्री नीमा को सौंप दिया। बड़े होने पर यही बालक कबीर कहलाया।

कबीर बचपन से धर्म्म परायण थे। यद्यपि ये एक जुलाहे के घर में पले, पर बचपन से ही एक हिन्दू की तरह तिलक लगाते, रामनाम जपते और लोगों को उपदेश दिया करते। इसी तरह इनका बचपन बीता। एक दिन इनसे किसी ने कह दिया कि "तुम बिनागुरू के हो,

नयी पहेलियाँ

(१)

रोज़ शाम को आती हूँ मैं,
रोज़ सबेरे जाती हूँ।
नींद न मुझको कभी समझना,
यद्यपि तुम्हें सुलाती हूँ॥

---

(२)

हाथ न हिलै न आँखे खोले, नहीं चलावें पैर।
कैसे करैं चारपाई में फिर दुनिया की सैर॥

---

(३)

आसमान में मेरा धाम।
सूरज चाँद नहीं है नाम॥
मैं निकलूँ जब होती रात।
दिन में छिप जाता हूँ तात॥
उल्लू या चमगीदड़, कौन ?
बतलाओ झट, हो क्यों मौन॥

---

(४)

तुम ज़मीन में गड़े हुए एक बाँस के चारों

ओर घूमते हो। उसी बाँस के सिरे पर एक बन्दर भी है जो इस प्रकार घूम रहा है कि उसका मुँह सदा तुम्हारो ही ओर रहता है, तो बताओ कि तुम बन्दर के चारों ओर घूमते हो या बाँस के, और क्यों ?

(५)

मैं झाड़ी में रहता हूँ। मैदानों और खेतों में घूमता फिरता हूं। सोना, चाँदी तोलने को सुनार मुझे बड़े यत्न से रखते है। कुएँ में गिरी हुई वस्तुएँ मुझे याद करती रहती हैं और यद्यपि मैं बगुला नहीं हूँ पर फिर भी मछली को पकड़ लेता हूँ; तो बताओं मैं कौन हूँ ?

(६)

एक वृक्ष पर ६२ पक्षी बैठे हैं। किसी शिकारी ने उसी वृक्ष पर बन्दूक चलाई। बन्दूक से ७ मर कर और २ घायल होकर नीचे आ पड़े तो बताओ उस वृक्ष पर कितने पक्षी बैठे रह गये ?

—रोहणीश्वर द्विवेदी।

पंडित भाई ! पंडित भाई !
　　है अति बुरी सफाई ।
जिसके पीछे पड़ कर तुमको,
　　दया न मुझ पर आई ॥

पण्डित जी ने मुस्करा कर कहा :—

तुमने ही क्या दया दिखाई ।
थी अब मुझमें नहीं सफाई ॥

यह सुन कर खटमल सिंह चुप रह गये और चीटियाँ उन्हें अपने बिल में खींच ले गईं । बेचारे पण्डित का बे-रहमी से खून चूसने वाले खटमल को मज़े की सज़ा मिली ।

—मांगी लाल ।

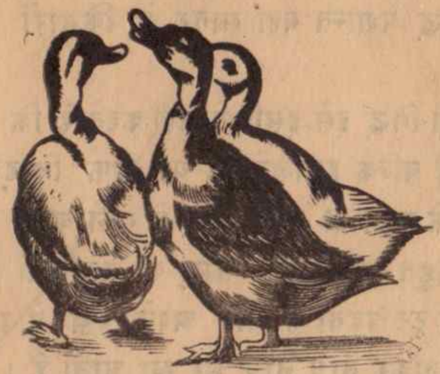

समुद्री-गिद्ध

जैसे जंगलों में पशुओं का राजा शेर है उसी प्रकार ऊपर हवा में उड़ने वाले पक्षियों का राजा गिद्ध है। यह भी शेर की तरह भयङ्कर और क्रूर होता है। शेर में सब चौपायों से अधिक शक्ति होती है और गिद्ध भी सब चिड़ियों से ज़्यादा मज़बूत होता है। शेर की तरह यह भी मांसाहारी होता है।

गिद्ध की कई जातियाँ होती हैं। पचासों तरह के छोटे बड़े गिद्ध पाये गये हैं, पर सब से बड़ा समुद्री-गिद्ध होता है। अकेले समुद्री-गिद्ध की ही कई जातियाँ हैं जो प्रायः दुनिया के सभी देशों में फैली हुई है। सब से बड़े गिद्ध प्रशान्त महा सागर के किनारों पर पाये जाते हैं।

समुद्री-गिद्ध इसे इसलिये नहीं कहते हैं कि यह समुद्र में तैरता है बल्कि इसलिये कि यह सिर्फ चिड़ियों और जानवरों के साथ ही साथ समुद्र में रहने वाली मछलियों को भी बहुत खाता है। समुद्र की मछलियों को देखते ही उन पर टूट पड़ता है और अपने पञ्जे में पकड़ लेता है, बाहर लाकर नोच नोच कर खा जाता है।